दांडी मार्च

धुँधले पदचिह्न

मधुकर उपाध्याय

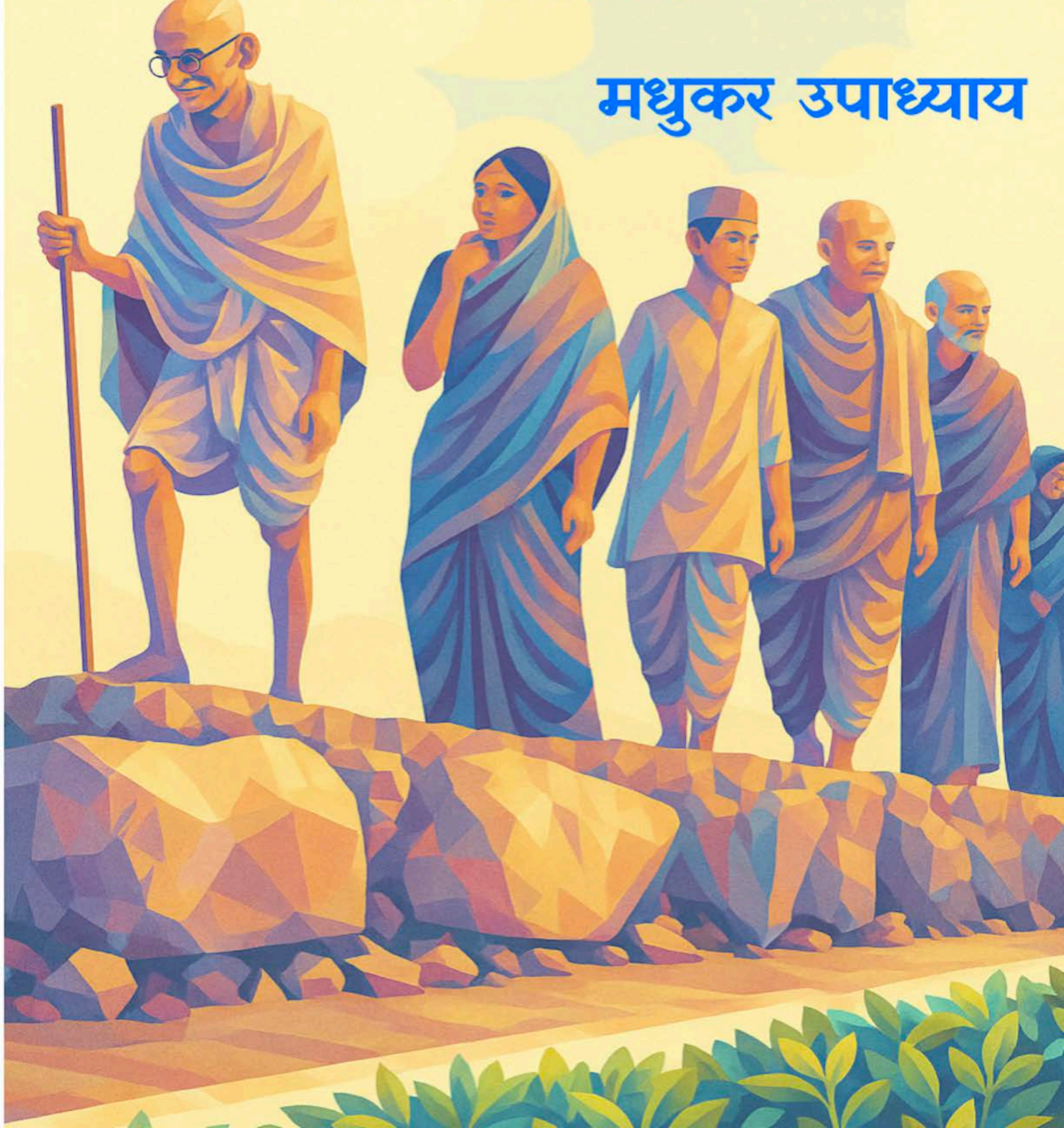

दांडी मार्च: धुंधले पदचिह्न

मधुकर उपाध्याय

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2025

© मधुकर उपाध्याय

अनुक्रम

भूमिका	6
पृष्ठभूमि	15
पहला दिन	37
1930: बारह मार्च	45
दूसरा दिन	57
1930, तेरह मार्च	65
तीसरा दिन	73
1930, चौदह मार्च	79
1930, पंद्रह मार्च	95
पांचवा दिन	103
1930, सोलह मार्च	110
1930, सत्रह मार्च (छठा दिन)	119
1930, अट्ठारह मार्च	131
आठवां दिन	140
1930, उन्नीस मार्च	148

नवां दिन 158

1930, बीस मार्च 163

दसवां दिन 169

1930, इक्कीस मार्च 174

ग्यारहवां दिन 184

1930, बाईस मार्च 191

बारहवां दिन 198

1930, तेईस मार्च 203

1930, चौबीस मार्च (तेरहवां दिन) 211

चौदहवां दिन 217

1930, पच्चीस मार्च 222

पंद्रहवां दिन 228

1930, छब्बीस मार्च 233

सोलहवां दिन 240

1930, सत्ताईस मार्च 246

सत्रहवां दिन 252

1930, अट्ठाईस मार्च 258

अट्ठारहवां दिन 266

1930, उन्तीस मार्च 271

उन्नीसवां दिन 284

1930, तीस मार्च 291

इक्कीसवां दिन 307

1930, एक अप्रैल 313

1930, दो अप्रैल 326

तेईसवां दिन 334

1930, तीन अप्रैल 340

चौबीसवां दिन 347

1930, चार अप्रैल 355

पच्चीसवां दिन 361

1930, पांच अप्रैल 367

1930, छह अप्रैल 382

गांधी की गिरफ्तारी और धरासणा पर धावा 392

परिशिष्ट - 1: सत्याग्रही 406

परिशिष्ट – II: दांडी मार्ग 414

परिशिष्ट – III: नदियां 421

परिशिष्ट - IV: घटनाक्रम 424

परिशिष्ट V: नमक कानून 433

परिशिष्ट - VI: संदर्भ सामग्री 438

भूमिका

भारत में ब्रिटिश शासन के आखिरी 50 वर्ष में मेरी दिलचस्पी हमेशा से रही है। इसके पीछे आजादी की लड़ाई के साथ-साथ यह जानने की इच्छा रही। है कि किसी शक्तिशाली साम्राज्य का पतन कैसे होता है। उसके टूटने के संकेत कहां से मिलने शुरू होते हैं और कब सत्ता उसके हाथ से फिसलने लगती है। प्रकृति और इतिहास में कोई खाली जगह नहीं होती। दरअसल जगह खाली होने से पहले ही उसे भरने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। उसकी संभावनाएं फलक पर दिखने लगती हैं। खाली जगह का यह भराव कितना सार्थक या निरर्थक है, यह बाद में पता चलता है और वह इतिहास का अगला पन्ना होता है।

प्रकृति की तरह इतिहास में भी कोई परिवर्तन अचानक नहीं होता। धमाके के साथ तो कतई नहीं, भले ही दूर से वह वैसा दिखाई देता हो। भारत की आजादी की लड़ाई भी एक लंबी प्रक्रिया रही है जिसे पूरा होने में 90 साल लगे। इसकी शुरूआत 1857 से हुई थी और अंतिम नतीजा 1947 में आया। वास्तव में 90 साल का यह संघर्ष ब्रिटिश शासन का भी संघर्ष है. लेकिन दूसरे अर्थ में। ब्रितानी संघर्ष अपनी सत्ता और अधिकार बनाए रखने का था, जो भारतीय संघर्ष के सामने धीरे-धीरे टूटता जा रहा था।